संदेश चार

हमारी परम्परा को प्रतिस्थापित करने के लिए पुनरुत्थान जीवन की ताज़ी आपूर्ति से दिन ब दिन नया होना और नया यरूशलेम की तरह बनने के द्वारा वास्तव में एक नया मनुष्य बनना

शास्त्र अध्ययन: 2 कुरि. 4:16; इफि. 2:15; 4:22-24; कुलु. 3:10-11

I. इफिसियों 4:22 कहता है, ''तुम पिछले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को उतार डालो'':

A. पुराना मनुष्यत्व हमारे प्राण में हमारे स्वभाविक जीवन को सूचित करता है; पुराना मनुष्यत्व हमारा वही प्राणी है जो परमेश्वर द्वारा रचा गया था लेकिन पाप से गिर गया-6:6:

1. पुराना मनुष्यत्व के साथ शामिल सबकुछ कलीसिया जीवन के लिए नुकसान है; जहाँ कहीं पुराना मनुष्यत्व है, वहाँ कोई कलीसिया नहीं हो सकती; इसका मतलब है कि जो हम हैं, जो हमारे पास है, और जो हम करते हैं वह कलीसिया जीवन को असम्भव बनाती है।

2. यदि हम पुराने मनुष्यत्व के अनुसार जीना जारी रखते हैं, तो कलीसिया जीवन गम्भीर रूप से क्षतिग्रस्त, यहां तक कि खत्म होगी; यदि हम पुराने मनुष्यत्व को उसके पिछले चालचलन समेत उतार देते हैं, तो हमारे पास एक अद्‌भुत कलीसिया जीवन होगी, एक कलीसिया जीवन जो नया यरूशलेम का लघुरूप है; ऐसी एक कलीसिया में विभाजन होना असम्भव है।

B. शब्द *जीवन का चालचलन* अत्याधिक मायने रखता है; संसार के हर देश में और हर लोगों के बीच जीवन के चालचलन का एक विशेष लक्षण होता है:

1. पिछले जीवन के चालचलन में हमसे संबंधित सबकुछ शामिल है; जो कुछ हम हैं, जो कुछ हम करते हैं और जो कुछ हमारे पास है हमें उसे उतार देना है, हमें हमारे जीने के तरीके को और अपनी परम्परा को उतार देना है; जितना मजबूत हमारी परम्परा है, दूसरों के प्रति हम उतने आलोचनात्मक हो जाएंगे-इफि. 4:31-31; कुलु. 3:12-14

2. यदि हम सचमुच नवीकृत होना चाहते हैं, तो हमें पिछले जीवन के चालचलन को उतारने की जरूरत है, जो हमारे जीने के तरीके और हमारी परम्परा को शामिल करता है; नया मनुष्य में युनानी और यहूदी, बर्बर और स्कूती, पराधीन और स्वाधीन के मौजूद रहने की कोई संभावना नहीं है क्योंकि इन लोगो में पाया गया पुराना चालचलन उतारा गया है।

3. जबकभी हम जीवन के पुराने चालचलन पर लौटते हैं, तो हम खुद ब खुद एहसास करते हैं कि हम अंदर से अँधेरे हो गये हैं और परमेश्वर के जीवन से अलग किसे गये हैं-इफि. 4:17-19

4. कलीसिया जीवन होने के लिए विभिन्न परम्पराओं और देशों से लोगों को पुराने जीवन के चालचलन में मिले पुराने मनुष्यत्व को उतारना होगा; कलीसिया जीवन में केवल मसीह के लिए स्थान है-कुलु. 3:10-11

5. राष्ट्रीयता के अनुसार बनी कहे जाने वाली कलीसियाओं को देखना कितना निंदनीय है; अपनी धरोहर को संजोने के बजाय हमें इसे अपना मानने से इंकार करना चाहिए; हम सहज ही अपनी पुरानी सामुदायिक जीवन पसंद करते हैं लेकिन स्वभाव, आचरण और अभ्यास में हमारा चालचलन बिल्कुल नया बन जाना चाहिए।

II. चूंकि इफिसियों 2:15-16 में नया मनुष्य सामुहिक मनुष्य है, 4:24 में नया मनुष्य सामुहिक भी है; इफिसियों 4:24 के अनुसार, हमें अपने नये मनुष्य को उतारने की जरूरत है जो कि मसीह में पहले से ही रचा गया है:

A. बपतिस्मा में हम पुराने मनुष्यत्व को उतार देते हैं जो मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया और दफनाया गया था; यह बपतिस्मा में ही था कि हम नया मनुष्य को पहिनते हैं-आ. 22-24; रोम. 6:6, 4

B. पुराने मनुष्यत्व को उतारना और नये मनुष्य को पहिनना समपन्न हो चुका तथ्य है; अब हमें इन तथ्यों को अपने मन की आत्मा के नये होने के द्वारा अनुभव और एहसास करना है-इफि. 4:23:

1. पुराने मनुष्यत्व को उतारना स्वयं पर क्रूस को लागू कर अपने पुराने स्वयं का इंकार करना और त्यागना है–आ. 22; मत्ती 16:24

2. नया मनुष्य को डालना यीशु मसीह की आत्मा के बहुतायत से मसीह को जीना और बढ़ाना है(फिलि. 1:19–21); यह उसे लागू करना है जो मसीह ने नया मनुष्य को बनाने में पूरा किया है(इफि. 2:15; 4:24)

C. परमेश्वर की आत्मा के साथ हमारी आत्मा के मिश्रित होने को हमारे मन की आत्मा बन जानी चाहिए(आ.23); फिर हमारा पूरा जीना आत्मा के द्वारा होगा, और जो कुछ हम करेंगे वह आत्मा के अनुसार होगा; ज्यों ही हम इस आत्मा द्वारा नवीनीकृत होते हैं, हम नया मनुष्य को डालते हैं।

D. हमें मिश्रित आत्मा के अनुसार चलने की जरूरत है जोकि हमारे मन में फैलता है और इस भरता है; इस प्रकार नया मनुष्य का प्रतिदिन का चाल मन की आत्मा में होगा; यह कलीसिया जीवन का रहस्य है–आ. 23

E. नया मनुष्य हमारी आत्मा में है; नया मनुष्य को पहिनने का तरीका हमारी आत्मा(जो आत्मा के साथ मिश्रित है) का हमारे मन की आत्मा बनने के लिए है, जिसमें परमेश्वर, परमेश्वर का निवास स्थान और नया मनुष्य पाया जाता है–2:22; 4:23:

1. आत्मा का मन की आत्मा बनने का मतलब है कि आत्मा हमारे मन को मार्गदर्शित, नियंत्रित, अधिकार तले, शासित और वश में रखता है(1 कुरि. 2:15–16; 2 कुरि. 2:13; 10:4–5); जब आत्मा हमारे मन को निर्देशित करता है, तो हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व हमारी आत्मा के नियंत्रण के अधीन होता है।

2. कितना हम नया मनुष्य को पहिनते हैं इस पर निर्भर करता है कि कितना हमारी आत्मा हमे निर्देशित करती है(1 कुरि. 2:15); जब हमारी आत्मा हमें शासित और नियंत्रित करती है, तो हमारी परम्परा, हमारी राय या अध्यादेशों के लिए कोई आधार नहीं होता है; हमारे मार्गो के लिए कोई स्थान नहीं होता क्योंकि हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व हमारी आत्मा द्वारा निर्देशित, अधिकृत, शासित और नियंत्रित होती है।

3. जितना अधिक मिश्रित आत्मा हमारी आत्मा को बेघती, संतृप्त करती और वश में करती है, उतना अधिक मसीह का मन हमारा मन बन जाता है–फिलि. 2:5; 1 कुरि. 2:16; रोम. 12:2

F. जब हम प्रभु यीशु में विश्वास करते हैं, जीवन दायक आत्मा हमारी आत्मा में आता है, अपने साथ नया मनुष्य को तैयार उत्पाद के रूप में लाता है; अब नया मनुष्य को हमारे अस्तित्व के हर भाग में फैल जाना और संतृप्त करना चाहिए; यह फैलना नया मनुष्य को पहनना और नवीनीकृत होना है।

G. हमें मन की व्यर्थता के अनुसार नहीं बल्कि मन की आत्मा के अनुसार जीना चाहिए; यह सामुहिक नया मनुष्य को प्रतिदिन जीने की कुंजी है, परमेश्वर के विशेषगुण, मसीह के सुगंध और आत्मा की एकता से भरी कलीसिया जीवन का रहस्य है–इफि. 4:3–4, 17–18, 23–24

H. हमारा प्रभु को प्रेम करने के द्वारा और प्रार्थना में और दिन प्रतिदिन वचन को पढ़ने में आत्मा का अभ्यास करने के द्वारा, हमारी आत्मा मिश्रित आत्मा से भर जाती है; यह हमारे मन को बदलता है और नया बनाता है; हमारे लिए मन में नवीनीकृत होना मानव जीवन की चीज़ों से जुड़ी सभी पुरानी धारणाओं से पीछा छुड़ाना है और पवित्र शास्त्रों की शिक्षाओं और पवित्र आत्मा के प्रकाशन द्वारा फिर से नया बनना है–भजन. 119:105,130; 1 तिमु. 3:15–17; व्यव. 17:18–20

I. वास्तविकता में एक नया मनुष्य होना जो परमेश्वर का इस युग में उद्देश्य है, के पूरे होने की एकमात्र संभावना तभी हो सकती है यदि हम अपने मन की आत्मा में नवीनीकृत होने के लिए इच्छुक हों।

II. **कुलुस्सियों को पौलुस के शब्दों का केन्द्रीय बिन्दु मसीह के पूर्ण ज्ञान तक मन का नवीनीकृत होने से संबंधित है जो परमेश्वर का स्वरूप है; नया मनुष्य हमारी आत्मा में रचा गया था और मसीह के स्वरूप अनुसार पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने तक हमारे मन को नया बनाता जाता है–इफि. 2:15; कुलु. 3:10–11:**

A. क्योंकि नया मनुष्य हमारे साथ रचा गया था जो पुरानी सृष्टि के हैं, उसे नया बनाने की जरूरत है; यह नया बनाना मुख्य तौर पर हमारे मन में होता है, जैसा वाक्यांश *पूर्ण ज्ञान* संकेत करता है–आ. 10

B. परमेश्वर के अनुसार नये मनुष्य की रचना पहले से पूरी हो चुकी है, लेकिन हमारे अनुभव में नया मनुष्य ध ीरे-धीरे पूर्ण ज्ञान तक नया बनता जाता है; जितना हम नया मनुष्य को पहिनते हैं उतना हम उसके अनुसार नये बनते जाते हैं जो परमेश्वर है, और उतना अधिक हम उसका स्वरूप, उसकी अभिव्यक्ति रखते हैं जो वह है-आ. 10

C. नया बनना हमारे पुराने तत्व को हटाने और बदलने के लिए परमेश्वर के तत्व का हमारे अस्तित्व में जोड़ा जाना है-प्रका. 21:5; 2 कुरि. 5:17; रोम. 12:2; 2 कुरि. 4:16

1. हमारी स्वभाविक और राष्ट्रीय मानसिकता हमारी जातीय और पारम्पारिक पृष्ठिभूमि के अनुसार सिखाई और बनाई गई है; यह नया मनुष्य के व्यवहारिक अस्तित्व की सबसे बड़ी बाधा है।

2. एक नया मनुष्य के लिए पूरे अस्तित्व में आने के लिए, हमें अपने मन के एक सम्पूर्ण नवीनीकरण को अनुभव करना होगा, जो हमारी राष्ट्रीयता और परम्परा के अनुसार बनी है।

D. नयापन परमेश्वर है; इसलिए, नया बनना जीवन और स्वभाव में नाकि परमेश्वरत्व में परमेश्वर बनना है:

1. परमेश्वर सर्वदा नया है, और वह अपना सदा नया तत्व हमारे पूरे अस्तित्व को नया करने के लिए हम में डालता है-रोम. 12:2; कुलु. 3:10

2. परमेश्वर का आत्मा हमारे अन्दरूनी भागों में परमेश्वर के गुणों को डालने के द्वारा हमें नया करता है, सदा नया है, कभी पुराना नहीं हो सकता और सदा के लिए और न बदलनेवाला है-प्रका. 21:5

3. नवीनीकृत करने वाली आत्मा हमें नयी सृष्टि, नया मनुष्य बनाने के लिए नया मनुष्य के दिव्य तत्व को हमारे अस्तित्व में डालती है-तितु. 3:5; 2 कुरि. 5:17; गला. 6:15

IV. हमें वे होने की जरूरत है जो नये यरूशलेम के रूप में नया मनुष्य बनने के द्वारा वास्तविक्ता में नया मनुष्य बनने के लिए और अपनी परम्परा को बदलने के लिए पुनरुत्थान की ताजी आपूर्ति के साथ दिन ब दिन नवीनीकृत होते हों-2 कुरि. 4:16:

A. नया मनुष्य को पहिनना सदा के लिए एक बार नहीं होता है; इसके विपरीत, यह आजीवन का मामला है, एक धीमी प्रक्रिया जो हमारे मसीही जीवन भर चलती है।

B. नये जन्में विश्वासी, नया मनुष्य का भाग के रूप में, हमें पुनरुत्थान में दिव्य जीवन की नयी चाल चलनी चाहिए और आत्मा की नयी विधि में सेवा करनी चाहिए-रोम. 6:4; 7:6

C. विश्वासियों को नया यरूशलेम के समान नया होने के लिए नवीनीकृत होना चाहिए चूंकि वे सब जीवन की नयी चाल चलने के द्वारा नया यरूशलेम बन रहे हैं और आत्मा की नयी विधि में सेवा करने के द्वारा नया यरूशलेम का निर्माण कर रहे हैं(7:6)।

D. हमारा अपने मन की आत्मा में नया बनना हमारे भीतरी मनुष्य के नवीनीकरण के लिए हमारे वातावरण में कष्ट द्वारा मसीह के स्वरूप में हमारी दैनिक रूपांतरण है-2 कुरि. 4:16:

1. जब हम क्लेश के बीच होते हैं, हमें नवीनीकरण को लेने की जरूरत है; नहीं तो, क्लेश जिससे हम गुजरते हैं हमारे लिए कोई मायने नहीं रखता; हमारे अंदर एक शरणार्थी है-हमारी आत्मा-भजन. 91:1; 27:5; 31:20; यशा. 32:2; 2 तिमु. 4:22; गला. 6:17-18

2. परमेश्वर हमारे वातावरण को तैयार करता है ताकि धीरे-धीरे और दिन प्रतिदिन हमारा बाहरी मनुष्यत्व का क्षय हो और पुनरुत्थान जीवन के रूप में आत्मानुमा मसीह की ताज़ी आपूर्ति के द्वारा हमारा भीतरी मनुष्यत्व का नवीनीकरण होता जाए-2 कुरि. 4:16

E. दिन प्रतिदिन नया बनने के लिए, हमें हर सुबह जागृत होना है-मत्ती. 13:43; लूका 1:78-79; नीति. 4:18; न्या. 5:31; 2 कुरि. 4:16

F. हम चार चीज़ों द्वारा दिन प्रतिदिन नये होते है: क्रूस(आ. 10-12, 16-18); पवित्र आत्मा जिसके द्वारा हम दिव्य जीवन से सुधारे, दुबारा बनाये जाते और नया किये जाते हैं(तितु. 3:5); मिश्रित आत्मा (इफि. 4:23); और परमेश्वर का पवित्र वचन(5:26)

G. हमें नवीनता में प्रभु के मेज़ पर आने की जरूरत है(मत्ती 26:29); प्रभु कभी पुरानी मेज़ नहीं लेता; हमें यह कहना, ''मैं शर्मिंदा हूं; मुझे माफ कीजिए'' सीखने के द्वारा नया होने की जरूरत है।

V. **नये मनुष्य का नवीनीकरण, हमारा चीज़ों को देखने पर निर्भर करता है जो ऊपर है-कुलु. 3:1-2; इफि. 2:5-6:**

A. उन चीज़ों को खोजना जो ऊपर है मसीह के उसके स्वर्गीय सेवकाई में गतिविधियों का उत्तर देना और व्यक्त करना है-इब्रा. 2:17; 4:14; 7:26; 8:1-2; प्रका. 5:6; कुलु. 3:1-2:

1. स्वर्ग में मसीह से पृथ्वी पर हम तक हमारी आत्मा में सर्व-सम्मिलित आत्मा के द्वारा एक संचार चल रहा है-इफि. 1:19, 22-23; 2:22:

   a. हमारी आत्मा दिव्य संचार को पाने का छोर है, जबकि स्वर्ग में परमेश्वर का सिंहासन संचार भेजने वाला छोर है-प्रका. 5:6

   b. अपनी आत्मा की ओर मुड़ने के द्वारा, हम स्वर्ग तक उठाये जाते हैं स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन से हमारी आत्मा में संचार के कारण, जब हम यहाँ पृथ्वी पर मसीह को आनंद करते हैं, हम खुद ब खुद स्वर्ग में होते हैं-4:1-2

2. अपने स्वर्गीय सेवकाई में मसीह लोगों की चरवाही कर रहा है, और हमें लोगों की चरवाही करने के द्वारा मसीह का सहयोग करने की जरूरत है; यदि यह संगति हमारे द्वारा ग्रहण किया गया, तो पृथ्वी पर प्रभु को वापस लाने की बड़ी जागृति होगी-1 पत. 5:1-4; मत्ती 9:36; 10:1-6; युह. 21:15-17; 1 पत. 2:25; इब्रा. 13:20

B. जब हम स्वर्गीय मसीह की सारी गतिविधियों के साथ उसकी ओर मुड़ते हैं और अपना मन इन चीज़ों पर लगाते हैं, तो स्वत: ही नया मनुष्य का नवीनीकरण होगा-8:1-2; 12:2; कुलु. 3:2

C. यह नया यरूशलेम में पूरा होने के लिए विश्वासियों को नयी सृष्टि के रूप में नया मनुष्य बनाने के परमेश्वर के इरादे को पूर्णता तक पहुँचाता है; परमेश्वर के कार्य की कलाकृति के रूप में नया मनुष्य विश्व में बिल्कुल नयी चीज़ है, परमेश्वर का नया आविष्कार है-आ. 10-11; 2 कुरि. 5:17; गला. 6:15-17; इफि. 2:10, 15

D. परमेश्वर का लक्ष्य नया मनुष्य को पाना है जो आखिरकार नया यरूशलेम में परिपूर्ण होगा, जो एक नये मनुष्य की अंतिम परिपूर्णता होगी।

© 2020 Living Stream Ministry